om 8 initial_Page 1 and 2 10-07-2014 21:34 Page 3

असाधारण की सीढ़ी...

दुनिया में दो ही तरह के लोग हैं, साधारण और असाधारण। साधारण से तात्पर्य है, जो अभी सिर्फ दीया हैं, ज्योति बन सकते हैं। साधारण, असाधारण का अवसर है, मौका है, बीज है। और असाधारण वह है, जो ज्योति बन गया और गया वहां - उस घर की तरफ जहां शांति है, जहां आनंद है, जहां खोज का अंत है और उपलब्धि है।

इसलिए विशिष्ट जब कहा जा रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि किसी से विशिष्ट। विशिष्ट जब कहा जा रहा है तो इसका मतलब है साधारण नहीं, असाधारण। हम सब साधारण हैं और हम सब असाधारण हो सकते हैं। और जब तक हम साधारण हैं, तब तक हम साधारण के बीच में भी साधारण-असाधारण के जो भेद खड़े करते हैं, वे एकदम नासमझी के हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

साधारण बस साधारण ही है, वह चपरासी है कि राष्ट्रपति, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये साधारण के ही दो रूप हैं – चपरासी पहली सीढ़ी पर, राष्ट्रपति आखिरी सीढ़ी पर। चपरासी भी चढ़ता जाए तो राष्ट्रपति हो जाए, और राष्ट्रपति उतरता आए तो चपरासी हो जाए। चपरासी चढ़ जाते हैं और राष्ट्रपति उतर आते हैं, दोनों काम चलते हैं। यह एक ही सीढ़ी पर सारा खेल है – साधारण की सीढ़ी पर।

साधारण की सीढ़ी पर सभी साधारण हैं, चाहे वे किसी भी पायदान पर खड़े हों या वे किसी भी सीढ़ी पर खड़े हों – नंबर एक की, कि नंबर हज़ार की, कि नंबर शून्य की – इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक सीढ़ी साधारण की है। और इस साधारण की सीढ़ी से जो छलांग लगा जाते हैं, वे आसाधारण में पहुंच जाते हैं।

असाधारण की कोई सीढ़ी नहीं है। इसलिए असाधारण दो व्यक्तियों में नीचे-ऊपर कोई नहीं होता। फिर कई लोग पूछते हैं कि बुद्ध ऊंचे कि महावीर? कि कृष्ण ऊंचे कि क्राइस्ट? तो वे अपनी साधारण की सीढ़ी के गणित से असाधारण लोगों को सोचने चल पड़े हैं। और ऐसे पागल भी हैं कि किताबें भी लिखते हैं कि कौन किससे ऊंचा। और उन्हें पता नहीं कि ऊंचे और नीचे का जो खयाल है, वह साधारण दुनिया का खयाल है। असाधारण ऊंचा और नीचा नहीं होता। असल में जो ऊंचे-नीचे की दुनिया के बाहर चला जाता है, वही असाधारण है। तो वहां कैसी तौल कि कबीर कहां कि नानक कहां! और ऐसी किताबें हैं और ऐसे नक्शे बनाए हैं लोगों ने कि कौन किस सीढ़ी पर खड़ा है वहां भी! कि कौन आगे है, कौन पीछे है, कौन किस खंड में पहुंच गया है! वह साधारण लोगों की दुनिया है, और साधारण लोगों के खयाल हैं। वे वहां भी वही सोच रहे हैं।

वहां कोई ऊंचा नहीं है, कोई नीचा नहीं है। असल में ऊंचा और नीचा जहां तक है, वहां तक दीया है। ज्योति बड़ी और छोटी नहीं होती। ज्योति या तो ज्योति होती है या नहीं होती। ज्योति बड़ी या छोटी का क्या मतलब है?

और निराकार में खो जाने की क्षमता छोटी ज्योति की उतनी ही है, जितनी बड़ी ज्योति की। और निराकार में खो जाना ही असाधारण हो जाना है। तो छोटी ज्योति कौन? बड़ी ज्योति कौन? छोटी ज्योति धीरे-धीरे खोती है? बड़ी ज्योति जल्दी खो जाती है? यह वैसी ही भूल है...इसे थोड़ा समझ लेना उचित होगा।

हज़ारों साल तक ऐसा समझा जाता था कि अगर हम एक मकान की छत पर खड़े हो जाएं और एक बड़ा पत्थर गिराएं और एक छोटा पत्थर – एक साथ – तो बड़ा पत्थर ज़मीन पर पहले पहुंचेगा, छोटा पत्थर पीछे। हज़ारों साल तक यह खयाल था, किसी ने गिरा कर देखा नहीं था। क्योंकि यह बात इतनी साफ-सीधी मालूम पड़ती थी और उचित, और तर्कयुक्त, कि कोई यह कहता भी अगर कि चलो ज़रा छत पर गिरा कर देखें, तो लोग कहते, पागल हो, इसमें भी कोई सोचने की बात है? बड़ा पत्थर पहले गिरेगा। बड़ा मास है, ज़्यादा मास है, छोटा पत्थर छोटा सा है, पीछे गिरेगा। बड़ा पत्थर जल्दी आएगा, छोटा पत्थर धीरे आएगा।

लेकिन उन्हें पता नहीं था कि बड़े पत्थर और छोटे पत्थर का सवाल नहीं है गिरने में, सवाल है ग्रैविटेशन का, सवाल है ज़मीन की कशिश का। और वह कशिश दोनों पर बराबर कर रही है, छोटे और बड़े का उस कशिश के लिए भेद नहीं।

मातेश्वरी ने निज ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में लाया

प्रश्न: दादी जी, मम्मा के दिन चल रहे हैं, मम्मा ने ऐसा क्या पुरुषार्थ किया जो नम्बरवन चली गईं? आप मम्मा की कुछ विशेषतायें सुनायें।

उत्तर: मम्मा ने ज्ञान को न सिर्फ कानों से सुना, पर उस निज ज्ञान को एकदम प्रैक्टिकल जीवन में लाया। चाहे गुणों के आधार से, चाहे ज्ञान के आधार से, चाहे योग के आधार से, चाहे सेवा के आधार से। मम्मा ने सब सबजेक्ट में नम्बरवन लिया। मम्मा बहुत प्यार से बैठकर ज्ञान सुनाती थी। मम्मा ज्ञान की एक-एक बात की गहराई में जाती थी। जैसे बाबा ने कहा बच्चों की ऐसी विशाल बुद्धि चाहिए। तो मम्मा की बुद्धि बहुत विशाल थी। डल बुद्धि, जामड़ी बुद्धि नहीं थी।

मैं भाग्यवान हूँ, बाबा-मम्मा को ज्ञान के पहले भी देखा था। बाबा को देखा था अपने जौहरी की पर्सनैलिटी से, वन्डरफुल पर्सनैलिटी थी। मम्मा को देखा था कुमारियों में से ऐसी कुमारी फैशनेबल, यज्ञ में आते ही उसमें अति परिवर्तन देखा। यह भी मम्मा की कमाल थी। एक धक से फैशन को छोड़ बहुत सिम्पल बन गई। शान्तामणि दादी मम्मा के मौसी की लड़की थी, परन्तु एक-दो का आपस में कोई लौकिक सम्बन्ध है, यह किसी को भी दिखाई नहीं पड़ा। मम्मा बहुत डिटैच रहती थीं। न्यारी-प्यारी। यह मम्मा की बड़ी खूबी थी। मम्मा कभी लौकिक सम्बन्ध के हिसाब से नहीं रही। मम्मा बहुत रॉयल थी। मम्मा ने माँ का पार्ट बजाया, लेकिन मम्मा के चलने-फिरने में भी कभी रोब नहीं देखा। मम्मा अमृतवेले चक्कर लगाती थी लेकिन कभी किसी से रोब से बात नहीं की। हम अजब खाते थे, पूणे में मम्मा हमारे साथ थी, सबके साथ मिलते-जुलते बहुत गम्भीर।

कभी साक्षी होकरके देखो, हम लोगों का भाग्य है, जानना, देखना फिर इतने साल साथ में पार्ट बजाना, यह कम बात है क्या! यह भी कितना भाग्य है!

प्रश्न: दादी हम लोगों की इतनी शुभ -भावनायें हैं, क्या यह शुभ-भावनायें पेन (दर्द) को समाप्त नहीं कर सकती?

उत्तर: हम सदा कहती बाबा आपका काम है कहना, हमारा काम है करना। बहुत करके गुल्ज़ार दादी यही कहती है – बाबा ने कहा, हमने किया। अभी कहते यह हिसाब-किताब है! मैं दादी गुल्ज़ार से कभी-कभी पूछती हूँ, क्या मेरा पूर्व जन्म का हिसाब-किताब चुक्तू नहीं हुआ है! शायद, शायद नहीं कहती हूँ, हिसाब-किताब चुक्तू नहीं हुआ है, न सिर्फ हमारा पर अनेक आत्माओं का। हो जायेगा। कर्मातीत तो बनना है ना! सतयुग तो आने वाला है ना, गैरन्टी है हम सतयुग में आने वाले हैं, सतयुग की स्थापना करने वाले हैं।

एक बारी का दृश्य मुझे कभी भूलता नहीं है। रोचा भोग लगा रही थी, तभी भोग की सिस्टम शुरु हुई थी, बाबा-मम्मा एक-दो को दृष्टि दे रहे थे। तो मम्मा से किसी ने पूछा मम्मा क्या आपको नशा चढ़ा हुआ था कि मैं लक्ष्मी, नारायण की हूँ! तो मम्मा ने बड़े प्यार से, सीरियसली आंख दिखाई। यह नहीं कह सकते मैं लक्ष्मी, नारायण की बनूंगी। मैं तो इस समय बाबा की बेटी हूँ। बहुत अव्यक्त स्वरूप था। ज़रा भी व्यक्त भान नहीं था। तो इस जन्म में मम्मा ने अपना पुरुषार्थ किया है, बाबा ने अपना किया है। मम्मा उस समय देह के भान से बिल्कुल परे थी।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

पुरुषार्थ में बहुत-बहुत सच्चाई चाहिए, ज़रा भी मिक्सचर नहीं। हम भी कहेंगे कुछ ज़रा भी मिक्सचर न हो। जैसे बाबा-मम्मा के पुरुषार्थ में मिक्सचर नहीं है, ऐसे हमारे पुरुषार्थ में भी न हो। मम्मा को परचिंतन, परदर्शन का जैसे पता ही नहीं था। कभी मम्मा को परचिंतन करते हुए नहीं देखा। जो बाबा ने कहा, मम्मा ने वही किया। कभी भी उसमें अपना संकल्प भी एड नहीं किया। मम्मा सदा एकान्तवासी थी। बहुत कम बोलती थी। मम्मा को एकान्त बहुत पसन्द था। दो बजे उठकर छत पर चली जाती थी, वहां एकान्त में तपस्या करती थी। मम्मा सदा अपने स्वमान में रही और सबका स्वमान बढ़ाने में नम्बरवन रही।

सतयुग की कारोबार के बारे में दादी से वार्तालाप

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: क्या सतयुग में लक्ष्मी नारायण आपस में कुछ डिस्कस करेंगे?

उत्तर: हाँ, बातचीत करेंगे, हसेंगे खेलेंगे क्यों नहीं! बाकी आप सब ही तो बने हैं ना! वो तो अभी भी याद करो तो वह खुशी आ जाती है।

प्रश्न: आज तक हमें ये लगता था कि हाँ कुछ फर्क होगा ज़रूर, फिर भी नम्बरवन बाप कहेंगे और फिर नम्बर टू शब्द शोभता नहीं है। आज बुद्धि में एक नई बात आ रही है जो बाबा कहते हैं कि आप अपना लक्ष्य रखो लक्ष्मी-नारायण बनने का...तो लगता है कि सिर्फ नारायण बनने का लक्ष्य रखना चाहिए।

उत्तर: हर एक का मर्तबा नम्बरवन अपने अनुसार है। राजधानी की कारोबार में भले ही लक्ष्मी नहीं होगी लेकिन उनके साथी जो कारोबार में उनके मदद्गार होंगे, वे तो साथ होंगे ना, अकेला थोड़े ही होगा। लक्ष्य में भले लक्ष्मी-नारायण दोनों ही कहा जाता है फिर भी नम्बरवन टू के हिसाब से तो पहले नारायण को रखेंगे ना।

प्रश्न: जैसे कहते हैं कि राज्य रानी का और हुकुम सरकार का तो रानी का भी तो कुछ राज्य होगा ना?

उत्तर: वो तो समानता होती है वहाँ, ऐसा नहीं समझो कोई भी काम है नारायण, लक्ष्मी के ऊपर रखता है तो लक्ष्मी भी ऐसा ही करेगी जैसे नारायण। दोनों को बुद्धि की ऑथोरिटी तो है ना, कम नहीं होते हैं, दोनों ही में अपनी-अपनी शक्ति, अपना-अपना संस्कार, अपनी-अपनी ड्यूटीज़...अपनी-अपनी है।

प्रश्न: देवताओं का जो कम्यूनिकेशन है जैसे आपने बताया कि खुशी की लेन-देन एक नैचुरल रीति से चलती परन्तु सूक्ष्मवतन में जब जाते हैं वहाँ पर कम्यूनिकेशन किस तरह से होता है? वतन में साक्षात्कार में वहाँ कम्यूनिकेशन कैसे होता है? आप बताते हैं ना आज बापदादा ने बांहों की माला पहनाई फिर आप बहुत डिटेल में हमें बताते हैं कि बाबा ने यह कहा, बाबा ने ऐसे बताया आदि-आदि...तो वो आप कैसे समझते हैं कि बाबा ने कैसे आपको बताया? और बाबा को जब आपको सन्देश देना होता है जो आप फिर आके हमें बताते हैं तो वो बाबा क्या आपकी बुद्धि को टच करता और वो आप समझ जाते हैं? क्योंकि हमने यह सुना है कि वतन में साइलेंस वा मूवी में ही सबकुछ चलता...या आपको लगता है जैसे बाबा आपको आवाज़ से बता रहा है।

उत्तर: हम जब सूक्ष्मवतन में ध्यान-दीदार में जाते हैं तो वो तो जैसे यहाँ दिखाई देते हैं ना, वैसे ही बाबा दिखाई देता है, बाबा आया, दूर से देखा तो उठा, मिला। जैसे यहाँ दिखाई देता है वैसा वहाँ भी एक्ट में दिखाई देता है। और जब कोई सन्देश लाना होता है तो बोलते हैं, बाबा बात करता है। जैसे सुनके कोई रूबरू देवे ना, ऐसे अनुभव होता है। लेकिन हम भी उस समय मूवी होते हैं ना तो हमको नैचुरल लगता है। समझ में ऐसे आता है भले बोलें कैसे भी, लेकिन समझ में ऐसे ही आता है जैसे टॉक कोई करता है यानि मुश्किल नहीं, यह क्या कहा बाबा ने! जैसे नैचुरल हम सुन रहे हैं, बाबा बोल रहा है और मैं भी तो परिवर्तन हो जाती हूँ ना, फरिश्ता बन जाती हूँ, तो नैचुरल लाइफ हो जाती है। फरिश्ते रूप में मैं भी तो आकारी हो जाती हूँ ना।

तो आकारी को आकारी की बात समझना ईज़ी होता है। आप सभी को अनुभव करना है तो अमृतवेले आप बैठके एक बारी चक्कर लगाके आओ। जितनी-जितनी पावरफुल अशरीरीपन की अवस्था होगी उतना ही कैच कर सकेंगे ना। यथाशक्ति होगा ना।